आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2610 • उदयपुर, बुधवार 16 फरवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

मानसा (पंजाब), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, चयन, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 6 एवं 7 फरवरी, 2022 को जन्डसर गुरुद्वारा बहादुरपुर, बरेटा मानसा (पंजाब) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता बीग हॉफ फाउण्डेशन रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 435, कृत्रिम अंग माप 200, केलीपर माप 41 की सेवा हुई तथा 46 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् रामसिंह जी शेखु (अध्यक्ष), अध्यक्षता श्रीमान् विजय कुमार जी (आत्माराम विद्यालय प्रिंसिपल), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् प्रदीप कुमार जी गुप्ता (समाज सेवी), श्रीमान् मनिन्दर कुमार जी (बीग ऑफ फाउण्डेशन), श्रीमान् कुलदीप सिंह जी (सचिव, बीग हॉफ फाउण्डेशन), श्रीमान् चक्रवर्ती जी पाठक, श्रीमान् शंकर कुमार जी, श्रीमान् सुरेश कुमार जी (सदस्य, बीग हॉफ फाउण्डेशन) रहे।

शिविर टीम में डॉ. विजय कार्तिक जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), चित्रा जी (पी.एन.डो.) श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री (शिविर प्रभारी), श्री मधुसुदन जी शर्मा (आश्रम प्रभारी),सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री कपिल जी व्यास (शिविर सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (फोटोग्राफर एण्ड विडियोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

कैमूर (बिहार), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 6 फरवरी 2022 को रीना देवी मेमोरियल हॉस्पीटल एन.एच.2 देवकली मोहनियॉ, जिला कैमूर (बिहार), में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता रीना मेमोरियल हॉस्पीटल ट्रस्ट मोहनियॉ एवं तान्या विकलांग सेवा संस्थान कैमूर रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 80, कृत्रिम अंग माप 15, कैलिपर माप 16, की सेवा हुई तथा 10 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री डॉ. राजेश जी शुक्ला (तान्या विकलांग सेवा संस्थान), अध्यक्षता श्रीमान् डॉ. अविनाश कुमार सिंह जी (मैनेजिंग डॉयरेक्टर), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् प्रेम शंकर जी पाण्डेय (हेड ऑपरेशन एण्ड एडमिनिस्ट्रेटर) रहे।

कैलीपर्स माप टीम में श्री डॉ. पंकज जी (पी.एन.डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्नीशियन), शिविर टीम में श्री लालसिंह भाटी जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी, श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन

सादर आमंत्रण

दिनांक:
20 फरवरी, 2022
समय:
सायं 4.00 बजे से
स्थान:
जाट धर्मशाला, बी.टी.एम. रोड
वैश्य कॉलेज के पास
भिवानी (हरियाणा)

निवेदक:
ओम प्रकाश अग्रवाल–सेवा प्रेरक
विनय कुमार पूर्णिया–सेवा प्रेरक
राधे श्याम कानूनगो–शाखा संयोजक

'आपश्री' से अनुरोध है कि भोजन महाप्रसाद हमारे साथ ही ग्रहण करावें–मान्यवर
सम्पर्क : +91 7023101162

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष

स्नेही स्वजन,
जय नारायण ! जय जिनेन्द्र !

परम पिता परमेश्वर की अनन्त कृपा से आपके अपने संस्थान के द्वारा संचालित दिव्यांगजन ऑपरेशन, भोजन, दवाई, चिकित्सा, दीन दुःखी, प्रज्ञा चक्षु, मूक बधिर, आवासीय विद्यालय, प्रशिक्षण एवं कृत्रिम अंग, केलीपर्स, वस्त्र व राशन वितरण की सेवाओं के साथ नारायण रोटी गरीबों तक पहुंचाने की सेवा प्रतिदिन हो रही है।

परम सौभाग्य का विषय है कि दानवीरों के करूण सहयोग व आशीर्वाद से सेवा कार्य लोक–कल्याण के उद्देश्य को पूर्ण कर रहे हैं और मदद चाहने की पंक्ति में खड़ा अन्तिम जरूरतमंद लाभान्वित हो रहा है। संस्थान के सेवा प्रकल्पों को विस्तार देने एवं और उपयोगी बनाने के पुनीत संकल्प के साथ सेवाव्रती सहयोगियों से सेवा चर्चा करने के लिए तथा उन्हें सम्मानित करने हेतु ''आत्मीय स्नेह मिलन'' का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आपश्री सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

धन्यवाद।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक व स्थान

19 फरवरी 2022
बजरंग व्यायामशाला, कार शोरूम के सामने, पटेल मैदान के सामने, अजमेर

20 फरवरी 2022
गांधी मैदान, मिर्जा गालिब कॉलेज, चर्च रोड, गया-बिहार

20 फरवरी 2022
जे.बी.एफ. मेडिकल सेंटर, भारतीयाग्राम सदल्लापुर, रामधर्म कांटा के पास, गजरौला

27 फरवरी 2022
मंगलम, शिवपुरी कोर्ट रोड, पोलो ग्राउण्ड के सामने, शिवपुरी, म.प्र.

27 फरवरी 2022
मानस भवन, बीआर साहू हायर सैकेण्डरी स्कूल के पास, मूंगेली, छतीसगढ़

27 फरवरी 2022
भारत विकास परिषद
मेरठ, उत्तरप्रदेश

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

आदिवासी बहुल रणेश जी में शिक्षा-चिकित्सा, स्वास्थ्य सुधार एवं सहायता शिविर

उदयपुर। दीन–हीन, निर्धन, आदिवासी वर्ग के उत्थानार्थ नारायण सेवा संस्थान द्वारा शुक्रवार को कोटड़ा तहसील के पिपलखेड़ा ग्राम पंचायत के अति दुर्गम पहाड़ियो में स्थित रणेशजी गांव मे शिक्षा–चिकित्सा, स्वास्थ्य सुधार एवं सहायता शिविर संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल के नेतृत्व में आयोजित हुआ। शिविर में कुपोषित, मैले कुचेले आदिवासी बच्चों के नाखून व बाल काटकर, मंजन करवाकर उन्हें नहला–धुलाकर 150 टूथपेस्ट–ब्रश, 250 स्वेटर एवं पौष्टिक बिस्किट बांटे गये। प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि शिविर में आयी मजदूर परिवार की औरतों को कीटाणुओं से होने वाली बीमारियों से अवगत कराया एवं मौसमी बीमारी से स्वस्थ रहने के उपाय बताये गये। साथ ही उन्हें सर्दी से बचाव के लिए 250 कम्बल, स्वेटर, मौजे, चप्पल वितरित किए गये। शिविर में आए 3 दिव्यांगों को वॉकर, 3 को स्टीक, 1 को बैशाखी दी गयी। वहीं 2 अतिनिर्धन एवं कुपोषित परिवारों को घर–घर जाकर एक महीने की राशन सामग्री दी गयी तो एक विधवा बहिन की दयनीय दशा को देखकर को सिलाई मशीन भेंट की गयी। संस्थान की मेडीकल टीम ने 150 ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया। डॉक्टर अक्षय जी गोयल ने बताया कि इन आदिवासियों में सर्दी, जुखाम, एलर्जी, दर्द फीवर, दाद–खुजली, केवीटी, एनिमिया जैसी बीमारीयों के लक्षण पाये गये जिन्हें उपचार देते हुए निःशुल्क दवाइयां दी गयी। इन्हें रोगों के प्रति जागरूक करते हुए 200 साबुन, मास्क, सेनेटाइजर आदि भी वितरित किये गये। शिविर में 30 सदस्यीय साधकों की टीम ने सेवाएं दी। शिविर का संचालन स्थानीय संयोजन आंगनवाड़ी कार्यकर्ता लीलादेवी जी ने तथा संस्थान की ओर से दल्लाराम जी पटेल, दिलीप सिंह जी, मनीष जी परिहार ने किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

रहिमन पानी राखिए,
बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे,
मोती, मानुष, चून।।

मोती का पानी उतर गया तो कोई कीमत नहीं। जिस मोती पर आब नहीं हो, और जो मोती बिंद नहीं जावे। बिंद जाये सो मोती है। और चूल्हे का पानी उतर गया तो ऊर्जा समाप्त हो गयी। मनुष्य का पानी आप और हम इन्सान है। अब सबसे पहले बैठे थे तो इन्सानियत पन्थाय नमः, निर्भीकता नमः और सत्चरित्राय, सत्गुणाय अपनाय नमः। ये सद्गुणों की कथा। ये कौ ाल्या माताजी के लीला की कथा इसलिये सुन रहे हैं। जो गौरव लेकर जाओ, लेकर वही लौट आओ। अपना ग्राफ गिरने मत देना। बढ़ा सके तो बढ़ावें, गौरव को बढ़ावें।

रोहित जी –गुरुदेव प्रश्न दो बहनों का है। दो बहनें ऐसी है जिन पर उनकी माता आश्रित है, भाई इनके नहीं है। तो छोटी बहन के यहाँ जो माता आती है तो बहुत रोती है। वो कहती है कि– बड़ी बहन के यहाँ गयी थी तो इतनी इन्सल्ट की थी, इतनी बेइज्जती की थी और सिर्फ चाहती क्या है कि माँ पूरी सम्पत्ति बड़ी बहन को दे दे। सम्पत्ति की वजह से।

गुरुजी –क्या रखा है, धन में? ये सोने के सिक्के भूख लगे तो खा भी नहीं सकते। भूख लगे तो भोजन भी नहीं कर सकते। भोजन तो रोटी का ही करना पड़ेगा। बड़ी बहन के यहाँ माताजी का जाने का मन भी कम होता होगा। होता क्या बाबू? वो कहते हैं– पैर पीछाणे मोजड़ी, नैण पीछाणे नेह। अपनी मोजड़ी अर्थात् चरण पादुका अपना पैर पहचान लेता है। एक ही कम्पनी के, एक ही नम्बर के ही। दो अलग–अलग चरण पादुका होगी और अपना पैर यदि अपनी चरण पादुका में नहीं गया तो पहचान जायेगा, ये मेरी चरण पादुका नहीं है। और नैण पहचाणे नेह। जब आपकी बड़ी बहन को नेह भी नहीं है तो माताजी को कम ही जाना चाहिये। और आप भी क्या है कि उनका चिन्तन करना छोड़ दे।

अपनी–अपनी आदत होती है भई, प्रकृति है भई।

पूर्वजन्म री प्रकृति है, हमारे पिताजी रे पास तो कबाला, जो बर्तन बेचने के लिए गाँवों में जाया करते थे। एक साधु महाराज आये तो पिताजी ने ऐसे ही पूछ लिया– आप महाराज कैसे बने? बोले सेठजी– दिल की बात बताता हूँ। चार साल पहले हम करोड़पति थे। पार्टनरशिप थी, मैंने मेरे पार्टनर के धन का हरण कर लिया। बेईमानी करके, ठगी करके मैंने पार्टनर को धोखा दे दिया। और धोखा भी इतना ज्यादा हुआ कि वो रोड़ पे आ गया, और वो मर गया। डेथ हो गयी उनकी। आत्महत्या कर ली। और फिर मेरा बेटा बन के आया। दो साल की उम्र में ही मेरा बेटा भयंकर बीमार हुआ उसको कैन्सर हो गया। और मैंने सब कुछ लुटा दिया, सब कुछ पैसा लगा दिया। और दो साल बाद अन्त समय में जब जाने लगा तो बोला– पहचाना मुझे? मैंने तो सोचा –ये दो साल का बच्चा बोल रहा है। बोला –बेटा, तूं तो मेरा बेटा है, तूं तो मेरा इकलौता बेटा है। बोला –नहीं, मैं आपका वो पार्टनर हूँ जिसको आपने धोखा दिया था। दगा किसी का सगा नहीं। अब मैंने वसूल कर लिया, अब मैं जाता हूँ। ऊँ नमः शिवाय। और मेरे बेटे की मृत्यु हो गयी, और मैं उसी समय सब कुछ छोड़ के साधु बनकर बाहर आ गया।

राहत पहुंची उखलियात, लाभार्थी प्रफुल्लित

नारायण सेवा सेवा संस्थान की मुहिम 'सकून भरी सर्दी' के तहत मंगलवार को संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल के नेतृत्व में राहत टीम गरीबों और आदिवासियों के लिए सेवा सामग्री लेकर उखलियात पहुँची। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि कोटड़ा तहसील के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में निवासरत आदिवासी, मजदूर परिवारों व बच्चों को शीतलहर में मदद पहुंचाते हुए 190 कम्बल, 200 स्वेटर, 170 टोपे और 100 जोड़ी चप्पल का वितरण किया गया। उन्होंने कहा राहत सामग्री लेने आये बच्चों और उनके परिजनों को शिक्षा व स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए प्रतिदिन नहाने व बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया गया। इस दौरान स्थानीय विद्यालय के शिक्षकगण और आँगनवाड़ी कार्यकर्ता लीला देवी जी, मौजूद थे। शिविर में मीडिया प्रभाग के भगवान प्रसाद जी गौड़, जसवीर सिंह जी, दिलीप सिंह जी, अनिल जी पालीवाल, रौनक जी माली, मनीष जी परिहार ने सेवाएं दी।

सम्पादकीय

इच्छाएं मानव की स्वाभाविक कमजोरी है। हरेक व्यक्ति, हर समय मानस रूप से ही सही कोई न कोई इच्छा करता ही रहता है। किन्तु यह पक्का है कि इच्छाएं ही कई बार पतन का कारण बनती हैं। यदि किसी व्यक्ति की कोई इच्छा पूरी नहीं होती है तो वह क्रोध की पकड़ में आ जाता है, उसका विवेक समाप्त सा होने लगता है। और यदि किसी व्यक्ति की इच्छाएं पूर्ण हो जाती है तो वह लोभ की गिरफ्त में आने लगता है, उसकी इच्छाएं बड़ी से बड़ी होने लगती है। इस प्रसंग में भी वह विवेक खोने लगता है।

कुल मिलाकर यह सिद्ध होता है कि इच्छाएं हर हाल में व्यक्ति में विकार लाती हैं। यहाँ पर यह स्मरण रखना चाहिये कि इच्छाओं व संकल्पों में बहुत अंतर है। इच्छाएं नकारात्मक हैं तो संकल्प सकारात्मक।

अतः उनसे मुक्त होना सीखना चाहिये।

कुछ काव्यमय

इच्छा और संकल्प में
बहुत बड़ा भेद है।
संकल्प एक सम्पूर्ण पात्र है
पर इच्छा में कई छेद है।
इच्छा से विवेक झर जाता है।
मनुष्य का संकल्प भर जाता है।

अपनों से अपनी बात

प्रेम तो अमर जड़ है

आपसे प्रश्न पूछता हूँ ऐसा कौन था जिन्होंने रणक्षेत्र में ऐसे बंकर बनाये, ऐसे चक्रव्यूह की रचना की जिसमें भीमसेन जी को भी और अर्जुन को भी अंदर नहीं जाने दिया था, नाम बताओ?

हाँ जयद्रथ। जयद्रथ का समय प्रतिकूल इसलिये आ गया क्योंकि उन्होंने दुष्टता का काम किया, और समय ऐसा प्रतिकूल आया कि अर्जुन ने जयद्रथ वध की प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं जयद्रथ का आज शाम को सूर्यास्त से पूर्व अवश्य वध कर दूँगा, और यदि वध नहीं कर पाया तो मैं अपने आप को चिता में लिटा के अग्नि को समर्पित हो जाऊँगा।

बन्धुओं, भाइयों और बहनों महाभारत की कथा है आपने बहुत बार श्रवण की है। सूर्यास्त होने जैसा लगने लगा, अर्जुन ने चिता सजाने की आज्ञा दे दी कि मुझे तो चिता में बैठना है। अब मैं जयद्रथ का वध नहीं कर पाया। अब मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूंगा। उस समय भगवान कृष्ण ने कहा– देख अर्जुन देख सूर्यदेव तो चमक रहे हैं, ये जयद्रथ सामने खड़ा है। उठा अपना गांड़ीव उठा और धनुष पर प्रत्यंचा चढाके इसका वध कर दे, और वध भी किया।

कहा था कि इसके मस्तक को धरती पर गिरने मत देना। इसके मस्तक को इसके पिताजी की गोद में स्थापित करना और पिताजी जैसे ही उठे वो मस्तक धरती पर उनकी गोद से गिर गया और उनके पिताजी के सिर के भी हजारों टुकड़े हो गये क्योंकि ऐसा ही शाप और वरदान उनको मिले हुये थे। बन्धुओं जब हम भक्ति की बात करते हैं, जब हम बात करते हैं कि प्रेमी देते हैं, लेते नहीं, प्रेम एक सौदा नहीं है।

– कैलाश 'मानव'

धन तो तुम्हारा था ही नहीं

एक व्यक्ति के पास बहुत सारा पुश्तैनी धन था। इस पर भी उसे संतोष नहीं था। किसी गरीब या जरूरतमंद की मदद करना तो दूर स्वयं भी ठीक से खाता पीता भी नहीं था। पत्नी ने उसे कई बार समझाया भी कि पैसा जोड़ने की बजाय अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान दो।

गरीबों की मदद किया करो। उन की दुआओं से तुम प्रसन्न रह सकोगे और श्री लक्ष्मी भी खुश होकर सदा हमारे यहां रहेगी।

किंतु उसने एक न सुनी उसे इस बात की चिंता थी कि कभी कोई यह धन चुरा ले गया तो क्या करूंगा। एक दिन वह धन की पोटली बांधकर रात को चुपचाप गांव के बाहर गड्ढा खोदकर उसमें दबा

आया, अब वह रोजाना उस स्थान पर जाता और देख आता। पड़ोस के गांव का एक चोर प्रायः उस गांव में आया करता था। उसने इसको हमेशा उसी जगह आकर एक निश्चित स्थान पर आंख गड़ाए लौटते देखा है। उसे यह समझते देर न लगी कि इस स्थान पर अवश्य कोई मूल्यवान वस्तु दबी हुई है। एक दिन वह पौ फटने और उस व्यक्ति के पहुंचने से पूर्व ही उस स्थान पर पहुंचा और खुदाई कर पोटली निकाल ली। सुबह होने को ही थी ,चोर उस गड्ढे को खुला ही छोड़ रफूचक्कर हो गया। अंधेरा छंटते ही व्यक्ति घर से अपने धन के स्थान पर ज्योंही पहुंचा उसके होश उड़ गए। उसका सारा धन जा चुका था।

इतनी बड़ी हानि वह सहन ना कर सका और वहीं रोने लग गया। कुछ देर बाद पत्नी आई उसने सारी स्थिति जानी। वह बोली धन तो पहले भी आपके काम नहीं आया था और ना आपके जीवन में काम आ सकता था क्योंकि उसे आप ने एक जगह स्थिर कर दिया था। आपका अधिकार उस पर जरूर था फिर भी उसे छिपा कर रखा। ऐसी हालत में दुखी होने की बजाय अपनी आंखें खोलो और बचे खुचे धन को परमार्थ में लगाओ जो हमारे जीवन में खुशियों का कारण बन सके।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

मदन सहृदय था तो बड़ा भाई देवीलाल कुछ सख्त और अनुशासन प्रिय था। कैलाश स्कूल से लौटने के बाद थोड़ा समय दूकान पर व्यतीत करता था। छोटा मोटा काम बताया जाता तो दौड़ कर कर देता था। एक दिन देवीलाल ने कैलाश को एक पर्ची दी जिस पर दो तीन नाम लिखे थे। इनसे उगाही कर पैसे लाने थे। किसी से रुपया किसी से दो रुपया वगैरा। सब आस पास ही रहते थे। कैलाश दौड़ा दौड़ा इनसे पैसे ले आया लेकिन रास्ते में एक पाई कहीं गिर पड़ी। कैलाश ने पैसे गिने तो एक पाई कम, वह डर गया कि अब ताऊजी के गुस्से का सामना करना पड़ेगा। यह बात अपने बापूजी को बताई तो उन्होंने अत्यन्त शांति से कहा कि गलती तो तेरे से हो गई है, ताऊजी डांटेंगे यह भी निश्चित है, मगर वो डांटें तो तू जाजम मत छोड़ना।

कैलाश को यह बात समझ में नहीं आई तो मदन ने समझाया कि ताऊजी कितना भी डांटें–फटकारें जाजम का एक कोना पकड़ कर बैठ जाना, भागना मत। दुकानों पर तब जाजमें ही बिछती थीं। टेबल–कुर्सियां तो सिर्फ स्कूल में ही दिखाई देती थी। कैलाश गया और डरते डरते ताऊजी को बताया कि उससे एक पाई कहीं गिर गई है। देवीलाल को बहुत गुस्सा आया, बात एक पाई की नहीं वरन लापरवाही की थी।

उसने कैलाश को कह दिया कि जा यहां से, अब दुकान पर आने की जरूरत नहीं मगर कैलाश को तो बापूजी ने ज्ञान दे दिया था, वह सिर झुका कर ताऊजी की फटकार सुनता रहा मगर उठा नहीं। देवीलाल उसे उठकर चले जाने को कहता रहा मगर वह टस से मस नहीं हुआ, आंखों से अश्रुओं की अविरल धारा बहती रही मगर उसने जाजम नहीं छोड़ी। कैलाश ने जीवन की एक बहुत बड़ी बात उस दिन सीख ली थी कि जाजम कभी नहीं छोड़ना।

अंश - 009

तीन ऑपरेशन के बाद चल पड़ा प्रीत

खेती करके जीवनयापन करने वाले सूरत गुजरात निवासी अजय कुमार पटेल के घर 11 वर्ष पहले प्री मैच्योर बेबी प्रीत का जन्म हुआ। जन्म के 6 माह तक बेबी को नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। गरीब सिान अजय दुःख के तले कर्जदार भी हो गया पर कर भी क्या सकता था। सामान्य हालात होने पर गुजरात के सूरत, राजकोट और अन्य शहरों के प्रसिद्ध हॉस्पीटल्स में दिखाया पर कहीं पर भी उसे ठीक होने का भरोसा नहीं मिला। घर के पड़ोस में रहने वाले राजस्थान निवासियों ने अजय को नारायण सेवा में जाने की सलाह दी। पहली बार 2019 में दिव्यांग प्रीत को लेकर परिजन उदयपुर आए डॉक्टर्स ने ऑपरेशन के लिए परामर्श दिया और एक ऑपरेशन कर दिया। बच्चे का पांव सीधा हो गया। दूसरी बार फरवरी 2020 में संस्थान आये तब उसके दूसरे पांव का ऑपरेशन किया गया। दोनों पांवों के ऑपरेशन के बाद प्रीत वॉकर के सहारे चलने लग गया। इसे देख परिजन पुनः अक्टूबर 2020 में उसे संस्थान में लेकर आए तब तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब प्लास्टर खुल चुका है... केलीपर्स व जूते पहनने के बाद प्रीत अपने पांव चलने लगा है। अब वह और उसे परिजन प्रसन्न हैं।

गाजर खाने की आदत बनाइये

सर्दियों में गर्म–गर्म गाजर का हलवा खाने का मजा ही कुछ और है। ऐसा नहीं है गाजर का हलवा ही स्वादिष्ट होता है, गाजर की सब्जी, सूप, जूस, सलाद या आचार खाने में जितने टेस्टी होते हैं, उतना ही शरीर के लिए फायदेमंद भी होता है। गाजर में विटामिन्स, पोषक तत्वों और फाइबर की भरपूर मात्रा होती है, जिसकी वजह से आयुर्वेद में इसे कई मर्जों की एक दवा कहा गया है। गाजर हमारी शरीर की इम्यूनिटी बढ़ाकर हमें गंभीर बीमारियों से बचाती हैं, तो चलिए जानते हैं गाजर के फायदे –

1 दुनिया में कैंसर का खतरा पहले से ज्यादा बढ़ गया है। ऐसे में गाजर एक ऐसी सब्जी है जो हमें कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से बचाने में बहुत मददगार है। गाजर में मौजूद कौरीटोनॉइड इम्यूनिटी बढ़ाकर बीमारियों से लड़ने की ताकत देता है, इसमें मौजूद बीटा–कैरोटीन प्रोस्टेट कैंसर से बचाव करते हैं।

2 सर्दियों में दिल का बहुत ख्याल रखना चाहिए। ऐसे में गाजर का सेवन बहुत उपयोगी हैं। गाजर में मौजूद बीटा–कैरोटीन, अल्फा–कैरोटीन और लुटेइन जैसे एंटीऑक्सीडेंट कॉलेस्ट्रोल लेवल बढ़ने नहीं देते और हार्ट अटैक के खतरे को कम कर देते हैं।

3 गाजर आपके शरीर के ब्लड प्रेशर को काफी हद तक कंट्रोल में रखता हैं। इसमें मौजूद पोटेशियम ब्लड प्रेशर को घटने या बढ़ने नहीं देता।

4 गाजर में मौजूद पोषण तत्व कई बीमारियों के लिए फायदेमंद है। गाजर खाने से गठिया, पीलिया और अपच से छुटकारा मिल सकता है। इसके साथ ही गाजर खाने से हड्डियां मजबूत होती है।

5 गाजर खाने से खून की कमी दूर होती है। इसमें पाई जाने वाली विटामिन ई पाया जाता है, जिसकी मदद से नया खून आसानी से बन जाता है। यही वजह है कि एनीमिया के मरीजों को सलाह दी जाती है कि वे गाजर को जरूर अपनी डाइट में शामिल करें।

6 आंखों के लिए गाजर रामबाण माना गया है। इसमें मौजूद विटामिन ए आंखों को सेहतमंद रखती है। यही नहीं गाजर में मौजूद बीटा कैरोटीन मोतियाबिंद से आंखों की रक्षा कर उनकी देखभाल करता है। नजर कमजोर वालों गाजर को सेवन करना चाहिए।

7 गाजर पेट की समस्याओं को दूर कर खून की सफाई करता है। जाहिर है कि ऐसे में स्किन भी अच्छी रहेगी और कील–मुंहासों से छुटकारा मिल जाएगा।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

धारावी ऐसा उपनगर मुम्बई महानगर का, जिसमें पन्द्रह लाख भाई बन्धु रहते हैं। जिसमें छोटी–छोटी गलियाँ हैं एक कमरा है छोटा सार्वजनिक लेट, बाथ है। गलियों में लगे हुए नल हैं, बस वहीं बदबू भी आती है। सब कुछ होता, पानी का कच्चा नाला भी बह रहा है। पानी रूक गया, आगे धारावी ऐसे कई उपनगर कई कच्ची बस्तियों के क्षेत्र है। एक बार मुम्बई के ऐसे ही कच्ची बस्ती में एक शिविर लगाया था। उसका स्मरण आता है। दस लेट, बाथ बना रखे हैं, वहाँ की पंचायत ने। उनके अन्दर गये तो किसी में पानी नहीं, किसी ने दरवाजा भी खराब कर दिया, अन्दर घुसे तो चिटकनी नहीं लगती। चिटकनी टूटी हुई है। मगा पड़ा हुआ है, लेकिन मगे में छेद हो रहा है। कैलाश तू कितना सुखी है? खूब आनन्द में है बेटा। इस आनन्द का कोई पारावार नहीं है, कभी लगता है। 1जुलाई 1987 कैसी रही होगी, जब पोषाहार बनना है। अगरबती जलाई गणेश भगवान को, ऊँ वक्रतुण्ड महाकाय, सूर्यकोटि समप्रभ, निर्विघ्नम् कुरुमेदेव सर्वकार्येषु सर्वदा, गणेश भगवान की स्तुति। अरे! वो केरोसीन रात को ही लाकर रख दिया था। अरे! महाराज एक कमरा पी. एण्ड.टी. कॉलोनी में ग्राउण्ड फ्लोर का ले लिया। जगदीश जी आर्य साहब सुबह चार बजे आ जाते, चार बजे से सात बजे तक भगवान बिठा देता। ये पत्र आये हैं, 1985 में बीस पत्र भेजते तो एक का उत्तर आता था, और उस समय कहा था कि एक दिन ऐसा भी आयेगा, कि एक भेजेंगे तो बीस आयेंगे, वो स्थिति आ गयी, वो स्थिति भगवान ले आया। सन् 1987 में डेढ़ सौ दो सौ डाक आने लग गयी थी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 362 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023